International Journal of Applied Research 2016; 2(12): 117-119

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2016; 2(12): 117-119
www.allresearchjournal.com
Received: 06-11-2016
Accepted: 08-12-2016

सुनीता देवी
षक्ति नगर गली न0 1, बरनाला रोड़ सिरसा, भारत।

Correspondence
सुनीता देवी
षक्ति नगर गली न0 1, बरनाला रोड़ सिरसा, भारत।

उदय प्रकाष कृत'कवि ने कहा' का शिल्प पक्ष

सुनीता देवी

प्रस्तावना

कविता कथ्य और शिल्प का समन्वित रूप होती है। कवि अपनी अनुभूति को भाषा के माध्यम से अभिव्यक्ति प्रदान करता है। भाषा सम्वेदनाओं को साकार रूप देती है। शब्दों का उपयुक्त चयन समुचित पद–विधान कविता को सम्प्रेषणीय और प्रभावोत्पादक बनाता है। अनुभूति की सच्चाई के साथ एक सशक्त शिल्प का विधान का होना भी कवि कर्म के लिए बहुत आवश्यक है। डॉ. उदयभानु हंस लिखते हैं कि– 'श्रेष्ठ कविता के लिए अनुभूति और अभिव्यक्ति दोनों का सशक्त होना परमावश्यक है।' यदि सघन अनुभूति कविता का प्राण है, तो उसकी अभिव्यक्ति के लिए उत्तम शब्द चयन, अंलकार, बिम्ब, प्रतीक, को 'उत्तम शब्दों का उत्तम विधान' और रिचर्डस ने कविता को 'भाषा का संवेगात्मक प्रयोग' कहकर भावों की अभिव्यक्ति के लिए भाषा के महत्त्व को प्रतिपादित किया है। श्री उदय प्रकाष कृत–काव्यकृति ' कवि ने कहा' का अनुभूति पक्ष अत्यंत सुदृढ़ है तो कला पक्ष भी सशक्त है।' शिल्प विधान का एक नमूना देखिए–

'अब तो वह आएगा तो उसे पहचानना भी मुष्किल होगा
हो सकता है, वह कहता हुआ आए कि मैं इस
षताब्दी का सबसे ज्यादा छला गया व्यक्ति हूँ
और वह विनोबा भावे और संत तुकाराम के बारे में
बात करे या सफेद–सफेद कपड़े पहनकर
सफेद–सफेद कबूतर उड़ाए या निरषस्त्रीकरण
पर वक्तव्य दे
उसका चेहरा सफ़ाचट हो, चेहरे में झुर्रियाँ हों
और वह सेना और पुलिस के होने के ही खिलाफ हो [1]

शिल्प के अन्तर्गत कवि के शब्द भण्डार, उसकी भाषा की विशेषताओं, बिम्ब विधान, प्रतीक योजना, अंलकार सौन्दर्य, काव्य रू और छन्दों आदि का विवेचन–विश्लेषण किया जा रहा है। ये सभी तत्त्व कविता के निर्माण में सहायक हैं। प्रस्तुत अध्याय में आलोच्य कविताओं के शैल्पिक तत्त्वों का विवेचन विश्लेषण करना ही हमारा मन्तव्य है।

अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम भाषा एवं काव्य–शिल्प का महत्वपूर्ण अंग है । भाषा का व्यवहार यों तो सभी करते हैं, पर सच्चा कवि उसे अपनी यशवर्तिनी बना कर रखता है । वह शब्द–शिल्प और भाषा की प्रकृति से पूर्ण परिचित होता है। वह काव्य–भाषा में आकर्षण और सौन्दर्य उत्पन्न करके उसे उत्कृष्ट बनाता है।' कवि ने इन्हीं विचारों की अनुपालना करते हुए भाषा–प्रयोग किया है। आलोच्य कवि की काव्य–भाषा में आकर्षण, सौन्दर्यमयता, सबलता एवं स्पष्टता विद्यमान है। कवि की शब्दावली भावों की अनुगामिनी है।

प्रभु का 'पुण्य–प्रसाद' पाया था
यह भारतखंड
यह गोलोक, यह केलिधाम,
यह महारास भूमि, यह ब्रज का पावन प्रदेष,
यहाँ सुंदरियाँ हड़ियल–मरियल क्यों
दृश्टिगोचर होती है ? [2]

कवि उदय प्रकाष ने 'भाषा बहता–नीर' की उक्ति को चरितार्थ किया है। समय प्रवाह के साथ–साथ उसमें अन्य भाषाओं के शब्द सम्मिलित होते चलते हैं और स्वयं के शब्दों का रूप भी बदलता चलता है। जो भी परिवर्तन होता है वह शब्द के स्तर पर ही होता है क्योंकि शब्द ही भाषा की सार्थक इकाई है। शब्द उस ध्वनि समूह हो कहा जाता है जिसमें भाव बोधक अथवा अर्थवहन करने की क्षमता होती है। भारतीय मनीषियों ने 'शब्द को ब्रह्म की तरह अनन्त, अक्षर, असीम एवं अजन्मा माना है। अतः जिस प्रकार ब्रह्म को 'अनेक रूप रूपाय' कहकर विविध रूपों वाला माना जाता है, उसी प्रकार शब्द के भी अनेक रूप स्वीकार किए जाते हैं। जैसे– तत्सम्, तद्भव, देशज, विदेशी और संकर अथवा द्विज। तत्सम् शब्द मूल भाषा के वे शब्द होते हैं जो अपने शुद्ध रूप में परिवर्ती भाषा में आते हैं। उपरोक्त आधार पर ही आलोच्य कृति का विवेचन विश्लेषण किया गया है। काव्य में अनुभूति और अभिव्यक्ति, अन्तर्वस्तु और रूप का पूर्ण सामंजस्य आवश्यक होता है। काव्य में अनुभूति के अंग–विषय वस्तु, चरित्र भावना, विचार, अभिप्राय, उद्देश्य या सन्देश है तथा काव्य में अभिव्यक्ति के अंग–संरचना, रूप, शैली, शिल्पविधि, छन्द और लय आदि। अनुभूति के विभिन्न उपादानों में आंतरिक सुसंगति तथा अभिव्यक्ति के बाह्य एवं अत्यांतरिक तत्त्वों की पारस्परिकता और इन दोनों के पूर्ण सामंजस्य से भी इस काव्य–कृति का निर्माण किया है। भाषा का एक उदाहरण देखिए–

डेढ़ किलो का मटिया लोहे का एक घन
स्थापत्य के इतिहास में संगमरमर के
सबसे ज़हीन और सबसे अद्भुत गुबंद को मलबे में बदलने के लिए
एक अँधेरा कोना
एक जरा–सी फुर्ती
डेढ़ किलो औंस का ढला हुआ सीसा
किसी कवि, किसी सन्यासी, किसी सुफी, किसी मुँहफट जोकर,
सबसे लंबी और जटिल प्रक्रिया में बनी
चीजों को खत्म करना। [3]

किसी भी कविता की काव्य रचना के काव्य–सौष्ठव का अध्ययन करने हेतु काव्य को कला पक्ष और भाव पक्ष की दृष्टि से विमल करना अनिवार्य होता है ।

अति आवश्यक है कि आम आदमी से जुड़ी कविता की भाषा भी आम आदमी की भाषा होनी चाहिए । नहीं तो कविता उससे दूर हो जाएगी जिसके लिए और जिसके ऊपर लिखी गई है । कुछ विद्वान कवि अपनी भाषा को कलिष्ट से कलिष्ट करके अपनी विद्वता तो झाड़ सकते हैं लेकिन इससे कविता का दम निकाल कर रख देते हैं और इसे आम आदमी से दूर करके अन्याय भी करते हैं। समय की आवश्यकता है कि कविता की भाषा सरल और सहज हो ताकि वह अधिक से अधिक पढ़ी समझी जाए।

आलोच्य कवि उदय प्रकाष ने काव्य की शोभा बढ़ाने के लिए विभिन्न बिम्बों का आश्रय लिया है। दृश्य, श्रव्य, घ्राण, नाद, आस्वाद्य आदि बिम्ब इनके काव्य को चमत्कारिक बनाने में सक्षम हैं। समग्रतः कहा जा सकता है कि आलोच्य कृति में चित्रित बिम्ब भावों को प्रभावोत्पादक और सरल बनाकर तो प्रस्तुत करते ही है साथ ही साथ मानवीय जीवन की विसंगतियों को भी आर्थिक सार्थक और सटीक ढंग से उभार रहे हैं। बिम्ब के अभाव में कविता ऐसी लगती है, जैसे उसमें कुछ छूट गया है। बिम्ब कविता को सजीवता प्रदान करता है। उदय प्रकाष बिम्बों के प्रयोग में पूरी तरह सतर्क है और अपनी कविता में उन्होंने तरह–तरह के बिम्बों के रंग भरे है। । 'काव्य बिम्ब' शब्दार्थ के माध्यम से कल्पना द्वारा निर्मित एक ऐसी मानस–छवि है जिसके मूल में भाव की प्ररेणा रहती है। इस प्रकार काव्यभाषा के संदर्भ में 'बिम्ब' का अर्थ शब्द–चित्र से है। यह शब्द चित्र मूर्त अथवा अमूर्त दोनों के भावों का हो सकता है। बिम्ब का वह अंलकारों की भान्ति मूल वस्तु पर ऊपर से या बाहर से आरोपित नहीं दिया। बिम्ब का वस्तु से सीधा सम्बन्ध होना चाहिए, अन्यथा बिम्ब और अंलकार में कोई अन्तर नहीं रह जाएगा। इन्हीं तथ्यों पर केन्द्रित बिम्ब विधान का उदाहरण देखिए–

एक इतिहास दिवस पर
इकट्ठा हुई भीड़
पूछ रही थी बार–बार।
पहली बार पूछा गया था
यह सवाल राजपथ पर
एकत्र हुई भीड़ द्वारा।
वहाँ हवा रूक गई थी,
सूरज का पहिया
थम गया था,
पेड़ सुन्न खड़े थे
सड़क के अगल–बगल [4]

हिन्दी कविता में प्रतीकों के प्रयोग की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है। प्रतीक में ऐसी शक्ति होती है कि वह अप्रस्तुत के माध्यम से सम्पूर्ण सन्दर्भ को ही अभिव्यक्त कर देता है। मानव जब अधिक भावुक या विचारक होता है, तब वह अपनी अभिव्यंजना के लिए प्रतीकों का आश्रय लेता है।

'प्रतीक' शब्द का सामान्य अर्थ 'संकेत' या 'चिह्न' है। आधुनिक हिन्दी साहित्य में प्रतीक शब्द को जिस रूप में ग्रहण किया गया है, उसका सम्बन्ध अंग्रेजी के 'Symbol Emblem' से है जो कि चिह्न या संकेत का द्योतक है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने इन दोनों शब्दों का एक साथ प्रयोग किया है। ऐसे अप्रस्तुत अधिकतर उपलक्षण के रूप या प्रतीकत्व या Symbolic होते हैं। प्रतीक चयन में कवि ने कुशलता दिखाई है–

हवा होती
पुरानी पत्तियों में से उठता है तुम्हारा षरीर
ताप्ती,
अधूरा ही छोड़ दिये गये किसी मकान जैसा,[5]

'हिन्दी शब्द सागर में इस शब्द का प्रयोग चिह्न, प्रतिरूप, प्रतिमा, संकेत आदि के अर्थ मं किया गया है।' डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के अनुसार प्रतीक

शब्द का प्रयोग उस दृश्य (अथवा गोचर) वस्तु के लिए किया जाता है, जो किसी अदृश्य (अगोचर या अप्रस्तुत) विषय का प्रतिविधिन उसके साथ अपने साहचर्य के कारण करती है, अथवा 'किसी अन्य स्तर की समानुरूप वस्तु द्वारा किसी अन्य स्तर के विषय का प्रतिनिधित्व करने वाली वस्तु प्रतीक है।

डॉ. कैलाश वाजपेयी के अनुसार 'प्रतीक विस्तार को संक्षेप में कहने का माध्यम है।' विद्वानों ने प्रतीकों को अनेक वर्गों में विभक्त किया है, लेकिन शर्मा की काव्य भाषा को ध्यान में रखते हुए उपजीव्य के विविध क्षेत्रों से ग्रहण किए गए प्रतीकों का चयन किया गया है । आलोच्य कवि ने ग्रामीण, शहरी, प्रकृति, पारिवारिक, सामाजिक, ऐतिहासिक और पैराणिक आदानों से प्रतीक चयन के बहुज्ञता का परिचय दिया है ।

आलोच्य काव्य–संग्रह में अलंकारों का सहज एवं स्वाभाविक प्रयोग कवि ने किया है । काव्य में अलंकार की अपेक्षा नहीं होनी चाहिए, पंत जी ने इस कथन में कुछ सार हो सकता है, पर आचार्य जयदेव के

1 उदय प्रकाष ' कवि ने कहा' पृ0 58

इस कथन– 'काव्य को अलंकार रहित मानने वाला, अग्नि को उष्णता विहीन क्यों नहीं मान लेता।' न केवल भामह, वामन और

रीतिकालीन आलंकरिक आचार्य ही काव्य में अलंकार के एकान्त महत्त्व को प्रतिपादित करते हैं, अपितु अनेक पाश्चात्य समीक्षक और हिन्दी के आधुनिक कई आलोचक भी, अलंकार की काव्य में अनिवार्यता और उसके महत्त्व को स्वीकार करते हैं । आलोच्य कवि ने अलंकारों का सहज और स्वाभाविक
प्रयोग किया है । उपमान, रूपक, उत्प्रेक्षा, विभावना, व्यतिरेक, वीप्सा, मानवीकरण आदि अलंकारों का सहज प्रयोग इन्होंने किया है । अलंकार प्रयोग का एक उदाहरण देखिए–

चली आ रही हैं इस्पात, फाइबर और अज्ञात यौगिक
धातुओं की तमाम अपरिचित–अभूतपूर्व चीज़ें
किसी विस्फोट के बादल की तरह हमारे संसार में
बैटरी का हनुमान उठा रहा है प्लास्टिक का पहाड़
और बच्चों के हाथों में बोल रही है कोई
डरावनी चीज़
डींप . . . डींप . . . डींप . . .[6]

आचार्य शुक्ल के शब्दों में, वस्तु या व्यापार की भावना चटकीली करने और भाव को अधिक उत्कर्ष पर पहुंचाने के लिए कभी किसी वस्तु का आकार या गुण बहुत बढ़ाकर दिखाना पड़ता है, कभी
उसके रंग–रूप या गुण की भावना को, उसी प्रकार के और रूप रंग मिलाकर तीव्र करने के लिए समान रूप और धर्म वाली और वस्तुओं को सामने लाकर रखना पड़ता है । कभी–कभी बात को घुमा–फिराकर कहना पड़ता है । इस तरह के भिन्न–भिन्न विधान और कथन के ढंग अलंकार कहलाते हैं । आचार्य नगेन्द्र ने इस प्रसंग में लिखा है, ... सत्य तो यह है कि अलंकार केवल रस के उपकारक ही नहीं, वे रस को अभिव्यक्ति के अनिवार्य माध्यम है। काव्य की भाषा..... व्यापक अर्थ में अलंकृत हो सकती है..... 'कोई भी कृति कवि चमत्कार–विहीन शब्दार्थ के माध्यम से रमणीय अर्थ या भाव का प्रतिपादन नहीं कर सकता और न कोई आलोचक ही इसे सिद्ध कर सकता है।' इस प्रकार स्पष्ट है कि काव्य–शिल्प में अलंकार का अत्यधिक महत्त्व ह। अतः इसे हम उसका अनिवार्य उपादान मान सकते है। किसी भी कविता के काव्य शिल्प का मूल्यांकन करते समय हमें अलंकार तत्त्व पर भी विचार करना होगा।

4.8 निष्कर्ष

'शिल्प' विचारों का परिधान है। यह एक ओर लेखक का मानस चित्र है तो दूसरी ओर इसे लेखक के मन की बाह्य आकृति भी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत लेखक की अभिव्यक्ति और अभिव्यंजना के विभिन्न उपादान समाहित होते हैं। उदय प्रकाष की भाषा खड़ी बोली हिन्दी है। इसके शब्द भण्डार में– तत्सम्, तद्भव, देशी–विदेशी शब्दों का समावेश हुआ है। देशज शब्दों में, बंगला, गुजराती आदि शब्द प्रयुक्त हुए हैं तो विदेशी शब्दों में उर्दू, फारसी और अंग्रेजी के शब्दों का सफल प्रयोग हुआ है।

संधर्व सूची

1. उदय प्रकाष 'कवि ने कहा' पृ0 64
2. उदय प्रकाष 'कवि ने कहा' पृ0 82
3. उदय प्रकाष 'कवि ने कहा' पृ0 110
4. उदय प्रकाष 'कवि ने कहा' पृ0 119
5. उदय प्रकाष 'कवि ने कहा' पृ0 66
6. उदय प्रकाष 'कवि ने कहा' पृ0 58